Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 10, Issue 1 | May 2022 - October 2022 | pp. 170-178

भारत-अमेरिका संबंध : बदलते वैश्विक परिदृश्य में

डॉ. शशि कान्त बैरवा

सहायक आचार्य
राजकीय महाविद्यालय, टोडारायसिंह, टोंक (राजस्थान)

शोध सारांश

वर्तमान में भारत व अमेरिका दोनों ही बड़े लोकतांत्रिक देश हैं, जहाँ भारत विश्व का सबसे बड़ा व क्रियाशील लोकतंत्र हैं वहीं अमेरिका की विश्व का सबसे सुदृढ़ लोकतंत्र के रूप में पहचान है। इसी कारण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के संचालन, नेतृत्व और नियंत्रण में दोनों की अहम भूमिका है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में न केवल भारत को अमेरिका की जरूरत है बल्कि अमेरिका को भी भारत की उतनी ही जरूरत है। इसलिए प्रस्तुत शोध आलेख से स्पष्ट होता है कि वर्तमान में भारत-अमेरिका संबंधो में मधुरता के साथ-साथ दोनों के मध्य संबंधो का रेखाचित्र ईरान, इराक, उत्तरी कोरिया, जलवायु परिवर्तन, सामरिक संधि-समझौतो, आर्थिक हितों को लेकर मित्रता-शत्रुता, कटुता-मिठास, तनाव-शिथिलता, अलगाव-प्रेम, विश्वास-अविश्वास के दायरे में निरंतर उतार-चढ़ाव का रहा है। अमेरिका इन समस्याओं का अपनी इच्छानुसार सुलझाना चाहता है, लेकिन भारत व अन्य राष्ट्रों की इच्छा है कि अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के तहत इन समस्याओं को हल किया जाये। समय का तकाजा है कि विश्व-शांति, सहिष्णुता, समृद्धि, मानवाधिकारों की रक्षा, पर्यावरण संरक्षण, आदि क्षेत्रों में लोकतांत्रिक सुदृढ़ीकरण के लिए दोनों राष्ट्रों को मतभेद भुलाकर कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ना होगा। इस प्रकार वर्तमान में भारत-अमेरिका संबंधो में काफी सुधार आया है। परिणामस्वरूप विश्व-शांति में बढ़ोतरी व मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

संकेताक्षर—*हाउडी मोदी, नमस्ते ट्रम्प, लीमोआ, क्वॉड, कोमकासा, बेका, ऑकस*

प्रस्तावना

भारत और अमेरिका दोनों ही देशों ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष कर स्वतंत्रता प्राप्त की तथा लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को अपनाया। दोनों ने ही स्वतंत्रता, समानता, मानव अधिकार, विश्व शांति, पंथनिरपेक्षता आदि आदर्शों को अपनी शासन व्यवस्था का आधार स्तम्भ बनाया। इन बुनियादी समानताओं के बावजूद भी दोनों देशों के मध्य भौगोलिक व विचारधारात्मक दूरियाँ होने के कारण समय-समय पर तनावपूर्ण संबंध रहे, लेकिन परिस्थितियाँ अनुकूल होने पर निकटता भी देखने को मिली। एक तरफ जहाँ अमेरिका पूँजीवादी विचारधारा का समर्थक था, वहीं भारत ने स्वतंत्रता के पश्चात् विकास का समाजवादी मॉडल अपनाया, दूसरी तरफ शीतयुद्ध के दौरान सम्पूर्ण विश्व दो गुटों में विभाजित था—पश्चिमी अर्थात् पूँजीवादी गुट तथा पूर्वी अर्थात् साम्यवादी गुट। जहाँ पश्चिमी गुट का नेतृत्वकर्ता अमेरिका था वही पूर्वी गुट का नेतृत्वकर्ता सोवियत संघ रूस था। किंतु भारत ने इन दोनो ही गुटों से तटस्थ रहते हुए गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण किया अर्थात् किसी भी गुट में शामिल नहीं हुआ, जिससे दोनों के मध्य तनाव की स्थिति बनी। उपर्युक्त संदर्भ में अमेरिका के तत्कालीन विदेश मंत्री जॉन फॉस्टर डलेस का कथन उल्लेखनीय है कि, "जो भी देश अपने को गुटनिरपेक्ष कहता है, अमेरिका उसे शत्रु मानेगा।[1] उपर्युक्त कारणों से भारत-अमेरिका के मध्य काफी लंबे अंतराल तक कटुतापूर्ण संबंध रहे, लेकिन वर्तमान वैश्वीकरण व उच्च तकनीकी युग

ने भौगोलिक व विचारधारात्मक दूरियों को अप्रासंगिक बना दिया है। सम्पूर्ण विश्व अब एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित होता नजर आ रहा है। इसी कारण दोनों के मध्य दूरियाँ भी कम हो गयी है और आज कुछ मुद्दों को छोड़कर सभी क्षेत्रों में सौहार्दपूर्ण संबंधों में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी हो रही है।[2]

भारत-अमेरिका संबंध : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में

आजादी से पहले भारत व अमेरिका में भौगोलिक दूरियाँ होने के कारण कोई विशेष संपर्क नहीं था। स्वयं अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध तक विश्व राजनीति में पृथक्कतावादी नीति अपनाता रहा किंतु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अर्थात् शीतयुद्ध के काल में अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देते हुए विश्व राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता रहा। उल्लेखनीय है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का यथार्थवादी दृष्टिकोण जिसका मूलभूत सिद्धांत यह है कि प्रत्येक राज्य की विदेशनीति उसके राष्ट्रीय हितों के आधार पर ही निर्धारित होती हैं तथा उसकी सिद्धि के लिए वह सदैव प्रयत्नशील रहता हैं। उपर्युक्त संदर्भ में यथार्थवाद के पिता मार्गेन्थाऊ का भी कहना है कि, "राष्ट्रीय हित केवल राजनीतिक आवश्यकता ही नहीं बल्कि प्रत्येक राष्ट्र का नैतिक कर्त्तव्य भी है कि वह दूसरे राज्यों के साथ व्यवहार के समय एक ही मार्गदर्शक, एक ही विचार स्तर, एक ही कार्य करने के नियम "राष्ट्रीय हित को अपनाए।"[3] इसी का परिणाम था कि अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से लेकर 1991 में सोवियत संघ के विघटन होने तक अर्थात् शीतयुद्ध की समाप्ति तक विश्व की एकमात्र महाशक्ति बने रहने के लिए अपनी विदेश नीति में आमूलचूल परिवर्तन कर अनेक देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया जिनमें से भारत भी एक था।[4] किंतु इस दौरान भारत-अमेरिका संबंधों में उत्तार-चढ़ाव देखने को मिला, क्योंकि शीतयुद्ध के दौरान भारत तत्कालीन सोवियत संघ का करीबी मित्र था तथा अमेरिकी गुट के विरुद्ध खड़ा था लेकिन 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत ने महसूस किया कि लगातार कटुतापूर्ण होते अंतर्राष्ट्रीय माहौल में वह मित्रविहीन हो गया है। इसी दौरान भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था का उदारीकरण कर वैश्विक अर्थव्यवस्था में कदम रखा। परिणामस्वरूप दोनों देशों के मध्य आर्थिक, व्यापारिक, सामरिक, ऊर्जा, तकनीकी, शिक्षा आदि कतिपय क्षेत्रों में मधुर व सहयोगपूर्ण संबंध दिखाई देने लगे जो वर्तमान में नई ऊंचाईयाँ छू रहे हैं।[5]

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में देखें तो नेहरू युग (1947-64) में भारत-अमेरिकी संबंधो की नींव पड़ी। पं. नेहरू 1949 में अमेरिका की यात्रा करने वाले पहलें भारतीय प्रधानमंत्री बनें। इसके पश्चात् 1956 व 1960 में पुनः अमेरिका की यात्राएँ की। 1959 में अमेरिकी राष्ट्रपति आइजनहॉवर भारत की यात्रा करने वाले पहले अमेरिकी राष्ट्रपति बनें। इस अवधि में दोनों देशों के बीच मई 1960 में चार वर्ष की अवधि के लिए पी. एल. 480 नामक एक समझौता हुआ जिसके तहत अमेरिका ने भारत को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न भेजने का आश्वासन दिया। तत्पश्चात् 1961 में नेहरू ने अमेरिका की तीसरी यात्रा की और इसी दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति कैनेडी ने भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति को मान्यता दी। परिणामस्वरूप दोनों देशों के मध्य निकटता बढ़ी। लाल बहादुर शास्त्री के कार्यकाल (1964-65) के दौरान 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध मे पाकिस्तान द्वारा भारत के विरुद्ध अमेरिकी हथियार उपयोग में लिये जाने तथा 1966 में ताशकंद समझौते में सोवियत संघ के मध्यस्थता करने के कारण अमेरिका द्वारा भारत पर कुछ आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए गये। परिणामस्वरूप दोनों मध्य तनाव उत्पन्न हुआ। किंतु 1966 में हीं शास्त्री जी की अकस्मात मृत्यु के पश्चात् इन्दिरा गांधी प्रधानमंत्री बनीं। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने प्रथम कार्यकाल (1966-76) में 1967 व 1971 में अमेरिका की यात्रा की। इस दौरान अमेरिका के साथ भारत के संबंध नफरत भरी मुहब्बत की विशेष भावना से प्रभावित रहे। इसलिए संबंध जितने सुधरने चाहिए थे उतने नहीं सुधर पाये। 1969 में अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन भारत आए तो दोनों के मध्य सहयोग की भावना जागृत हुई किन्तु अगस्त 1971 में भारत-सोवियत संघ के बीच मैत्री संधि ने संबंधो को सहयोग से टकराव की ओर मोड़ दिया। इसी दौरान 1971 में भारत पाक युद्ध (बांग्लादेश सकंट) में अमेरिका ने पाकिस्तान का समर्थन किया तथा भारत की सैनिक सहायता बंद कर दी। उपर्युक्त सभी कारणों ने दोनों के मध्य तनाव रूपी आग में घी डालने का काम किया। 1974 में अमेरिका ने हिन्द महासागर में स्थित डियागोगार्शिया नामक द्वीप पर सैनिक अड्डा स्थापित किया, इधर 1974 में भारत ने पोकरण में प्रथम परमाणु परीक्षण कर अपना नाम परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों की श्रेणी में दर्ज करा दिया जिससे संबंधों में एक बार फिर शंका के बादल मंडराए।[6]

1977 में भारत और अमेरिका दोनों में सत्ता परिवर्तन हुआ और जहाँ भारत में पहली बार गैर कांग्रेसी (जनता सरकार) आयी, वहीं अमेरिका में जिम्मी कार्टर राष्ट्रपति बने। 1978 में प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने तथा तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अमेरिका की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान देसाई ने कहा था कि, "हमारी गुरनिरपेक्षता सिर्फ नीति ही नहीं है, यह एक धर्म है, इसके द्वारा हमें अंतर्राष्ट्रीय मामलों को गुण दोष के आधार पर परखने में मदद मिलती हैं।" इसी कारण जनता सरकार ने, 'सच्ची गुटनिरपेक्षता' पर चलने का ऐलान किया। 1978 में अमेरिकी राष्ट्रपति जिम्मी कार्टर ने भी भारत की यात्रा की तथा व्यापार, तकनीकी, रक्षा, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में सहयोग का आश्वासन दिया। परिणामस्वरूप कुछ मिथ्या धारणाओं को दूर करने का प्रयास किया गया तथा सहयोग और मित्रता को बल मिला। इन्दिरा गांधी के द्वितीय कार्यकाल (1980-84) में अमेरिका से परमाणु संबंध बढ़ाने पर जोर दिया। 1981 के कानकुन शिखर सम्मेलन के दौरान इन्दिरा गांधी ने तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति रीगन से वार्ता कर संबंधो को नया मोड़ दिया। रीगन के निमंत्रण पर इंदिरा गाधी ने 1982 में अमेरिका की अंतिम यात्रा की। 1984 में आतंकवादियों द्वारा इन्दिरा गांधी की हत्या कर दिये जाने के पश्चात् राजीव गांधी प्रधानमत्री (1984-89) बने। राजीव गांधी ने जून, 1985 में अमेरिका की यात्रा की ओर दोनों देशों ने तकनीकी, औद्योगिक अनुसंधान, कृषि, वानिकी, स्वास्थ्य, आतकंवाद को रोकने, रक्षा, निःशस्त्रीकरण आदि क्षेत्रों में सहयोग पर सहमति व्यक्त की। 1987 में दोनों देशों के मध्य 'सुपर कम्प्यूटर' के संबंध में समझौता हुआ। इस प्रकार राजीव गांधी के काल में सहयोग और तनाव दोनों देखने को मिलें। वी. पी. सिंह और चंद्रशेखर के काल (1989-91) में भारत आतंरिक सकंट से गुजर रहा था, वहीं अमेरिका इराक में फँस जाने के कारण दोनों देशों का अपनी-अपनी विदेश नीतियों से कुछ समय के लिए ध्यान भटका। तत्पश्चात् पी. वी. नरसिम्हाराव के कार्यकाल (1991-95) में भारत-अमेरिका के मध्य परमाणु अप्रसार संधि व मानवाधिकारों के प्रश्न को लेकर मतभेद बना रहा तथापि दोनों देशों ने आर्थिक क्षेत्र में सहयोग पर बल दिया। इन्हीं के काल में भारत ने उदारीकरण की नीति अपनायी तथा अपने बाजारों को विदेशी निवेश हेतु खोलकर उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण का मार्ग अपनाया। तत्पश्चात् देवगौड़ा तथा गुजराल के नेतृत्व में एक-एक वर्ष के लिए संयुक्त मोर्चा सरकार (1996-98) बनी। इनके काल में अमेरिका ने भारत पर परमाणु अप्रसार संधि (एन.पी.टी.) व सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर के लिए दबाव डाला लेकिन भारत ने पूरी दृढ़ता के साथ इसका विरोध किया। तत्पश्चात् अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बनें। इनके काल (1998-2000) में 11 व 13 मई, 1998 को भारत ने पांच परमाणु विस्फोट कर भारतीय विदेश नीति में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया। परिणामस्वरूप तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिटंन ने भारत पर कठोर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए। तत्पश्चात् 1999 में कारगिल संघर्ष में अमेरिका प्रत्यक्ष रूप से भारत का समर्थन किया तथा पाकिस्तान को चेताया कि वह वास्तविक नियंत्रण रेखा का उल्लंघन न करे जिससे संबंधों में थोड़ी मिठास उत्पन्न हुई।[7] मार्च, 2000 में राष्ट्रपति क्लिटंन भारत यात्रा पर आये जो कि 22 वर्षों बाद किसी अमेरिकी राष्ट्रपति की भारत यात्रा थी। दोनों देशों के बीच आतकंवाद, परमाणु मुद्दे, और संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थायी दावेदारी पर विस्तार से चर्चा हुई। सितंबर, 2000 में वाजपेयी अमेरिका यात्रा पर गये जहाँ उपर्युक्त मुद्दों पर अमल करने हेतु सहमति बनी। इस प्रकार इस काल में दोनों देशों के संबंधो में सुधार के संकेत मिलने लगे। 2004 में डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनी तथा लगातार दो कार्यकाल (2004-14) तक सत्ता में बनी रही। इनके कार्यकाल के दौरान भारत-अमेरिका संबंधों में प्रगाढ़ता, गर्मजोशी, और नई सक्रियता का आगाज हुआ। मनमोहन सिंह की अमेरिका यात्रा (18-20 जुलाई 2005) के दौरान 18 जुलाई 2005 को भारत अमेरिका के बीच अब तक के सबसे बड़े ऐतिहासिक परमाणु समझौते पर सहमति बनी जिसकी अमेरिकी सीनेट द्वारा 2006 में भारी बहुमत से पुष्टि करने के पश्चात् वर्ष 2008 में अंतिम रूप से लागू हुआ। परिणामस्वरूप दोनों के संबंधों में एक नई ऊर्जा का आगाज हुआ। इसी कड़ी में दोनों देशों के मध्य 2009 में ई.यू. एम.ए. (EUMA- एंड यूज मॉनिटरिंग एग्रीमेंट) हुआ जिसके तहत दोनों देशों ने परमाणु सहयोग के क्षेत्र में सहमति व्यक्त की। किंतु 2014 में न्यूयार्क में भारतीय राजनयिक देवयानी खोबरागड़े की गिरफ्तारी से दोनों के मध्य कुछ समय के लिए तनाव देखने को मिला।[8] अतः भारत-अमेरिका संबंधों का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि दोनों देश निःसंदेह हर क्षेत्र में काफी करीब आ रहे हैं लेकिन कतिपय क्षेत्रों यथा परमाणु मुद्दे, जलवायु परिवर्तन, एन.पी.टी.,

सी.टी.बी.टी. आदि मुद्दो पर दोनों के बीच अब भी अधंकार की स्थिति बनी हुई है।

श्री नरेन्द्र मोदी व भारत-अमेरिका संबंध

श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी 26 मई, 2014 को भारत के प्रधानमंत्री बनें और पुनः दूसरे कार्यकाल के लिए 2019 से लगातार प्रधानमंत्री पद पर आसीन हैं। सत्ता में आने के तुरतं बाद से ही मोदी सरकार ने अन्य देशों के साथ संबंधो को नया आयाम देने की दिशा में कार्य करना आरंभ कर दिया। उल्लेखनीय है कि मोदी जी के 2014 के प्रधानमंत्री पद के शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित किया गया था जो कि विदेश संबंधो की दिशा में नई शुरुआत थी। 26 सितम्बर, 2014 को मोदी जी ने अमेरिका की अपनी पहली यात्रा की तथा दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, सामरिक, सैन्य, रक्षा, आर्थिक, आदि क्षेत्रों में संबंध प्रगाढ़ता से आगे बढ़े और दोनों देशों के बीच जो अविश्वास रूपी खाई थी उसे कम करने का प्रयास किया गया। 26 जनवरी, 2015 को भारत के 66वें गणतंत्र दिवस समारोह में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा मुख्य अतिथि बनने वाले पहले अमेरिकी राष्ट्रपति बने। इससे प्रतीत होता है कि मोदी और ओबामा भारत अमेरिकी रिश्तों को कितनी ऊंचाई तक ले जाने के लिए प्रयत्नशील है। जनवरी 2017 में अमेरिका में सत्ता परिवर्तन हुआ और रिपब्लिकन पार्टी के डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति बने। इनके राष्ट्रपति बनने के पश्चात् जून 2017 में मोदी जी की दूसरी अमेरिकी यात्रा के दौरान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से विभिन्न मुद्दों पर वार्ता हुई और उन्हें भारत आने हेतु आमत्रंण पत्र दिया।[9] डोनाल्ड ट्रंप 24-25 फरवरी, 2020 को सपरिवार भारत यात्रा पर रहे जो कि राष्ट्रपति के रूप में ट्रंप की यह पहली यात्रा थी तथा भारत की यात्रा करने वाले वह अमेरिका के 7वें राष्ट्रपति थे। उल्लेखनीय है कि इनसे पूर्व डी. आइजनहावर (1959), रिचर्ड निक्सन (1969), जिम्मी कार्टर (1978), बिल क्लिंटन (2000), जॉर्ज डब्ल्यू बुश (2006), बराक ओबामा (2010, 2015) क्रमशः भारतीय प्रधानमन्त्री पं. नेहरू, इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. मनमोहन सिंह, डा. मनमोहन सिंह व नरेन्द्र मोदी के काल में भारत यात्रा पर आये। 24 फरवरी को ट्रंप अहमदाबाद पहुँचे, जहाँ मोटेरा स्टेडियम में 'नमस्ते ट्रम्प' नाम से एक वृहद कार्यक्रम को संबोधित किया। यह कार्यक्रम उसी तर्ज पर था जैसा श्री नरेन्द्र मोदी की सितम्बर 2019 की अमेरिका यात्रा के दौरान ह्यूस्टन में 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम आयोजित हुआ था। मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि ट्रम्प परिवार का यहाँ आना भारत-अमेरिका रिश्तों को एक परिवार जैसी मिठास और घनिष्ठता की पहचान दे रहा है। उन्होंने कहा कि एक को 'स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी' पर गर्व हैं, तो दूसरे को दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का गौरव है। इसी प्रकार राष्ट्रपति ट्रंप ने भी अपने भाषण की शुरुआत—"अमेरिका भारत से प्यार करता है से जहाँ की वहीं इसका अंत, 'हम भारत को बहुत प्यार करते हैं से किया।" और दोनों देशों के मध्य संबंधों की नई शुरुआत का आगाज किया।[10]

भारत-अमेरिका : संबंधों की नई शुरुआत

भारत में मोदी जी और अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प के सत्ता में आने के बाद दोनों देशों की बीच सहयोग में तीव्रता से वृद्धि हुई और नये-नये क्षेत्रों में सबंध स्थापित हुए। जिसका सबसे बड़ा उदाहरण था अमेरिका का अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के 101वें सदस्य के रूप में सदस्यता ग्रहण करना। ज्ञातव्य है कि सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए भारत के नेतृत्व में 2015 में पेरिस जलवायु सम्मेलन के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व फ्रांस के तत्कालीन राष्ट्रपति फ्रांसिस ओलादं द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की स्थापना की गई थी। उल्लेखनीय है कि 21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में पर्यावरण का मुद्दा कार्बन, प्रसरण, ग्लोबल वार्मिंग या पर्यावरण के संरक्षण तक ही सीमित नहीं रहा है अपितु खाद्य सुरक्षा, जल सुरक्षा, तकनीकी, सामरिक और पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोतों का संरक्षण आदि क्षेत्रों में भारत-अमेरिका रिश्तें तेजी से आगे बढ़ रहे है।[11] वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली ने भारत-अमेरिका संबंधो को एक उभरती हुई वैश्विक सामरिक भागीदारी में तब्दील कर दिया है। दोनों देशों ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता, समृद्धि और सुरक्षा को बढ़ावा देने के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है तथा इसकी सिद्धि हेतु अनेक संधि-संगठनों में दोनों की सकारात्मक रूप में सक्रिय भागीदारी देखने को मिली है जिनमें से प्रमुख निम्न है—

1. सितम्बर, 2019 में मोदी जी की अमेरिकी यात्रा के दौरान ह्यूस्टन में 'हाउड़ी मोदी' कार्यक्रम व इसी की तर्ज पर 24 फरवरी, 2020 को अहमदाबाद के मोंटेरा स्टेडियम में 'नमस्ते

ट्रम्प' कार्यक्रम, दोनों देशों के बीच सहयोग हेतु संबंधो की नई शुरुआत का आगाज था।

2. **2+2 वार्ता**—भारत व अमेरिका के बीच तीसरी 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता भारत की मेजबानी में 26-27 अक्टूबर, 2020 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें तत्कालीन अमेरिकी विदेश मंत्री व रक्षा मंत्री क्रमशः माइकल आर. पॉम्पियों व मार्क टी. एस्पर ने भाग लिया। वार्ता में भारत का प्रतिनिधित्व रक्षा मंत्री व विदेश मंत्री क्रमशः राजनाथ सिंह तथा डॉ. एस. जयशंकर ने किया। इस दौरान दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय सहयोग के प्रमुख पहलुओं यथा त्वरित आर्थिक सुधार और विकास की आवश्यकता, कोविड-19 महामारी की रोकथाम, रक्षा क्षेत्र में सहयोग से संबंधित मुद्दे वार्ता में मुख्यतः शामिल थे। अमेरिका ने भारत की संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में स्थायी सदस्यता के साथ-साथ नाभिकीय आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) में भारत की सदस्यता के समर्थन को दोहराया। इसी वार्ता में रक्षा क्षेत्र में सहयोग पर व्यापक चर्चा हुई तथा दोनों देशों के रक्षा विभागों द्वारा एक ऐतिहासिक 'बेसिक एक्सचेंज एण्ड को-ऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA)' पर हस्ताक्षर हुए, जिसके तहत दोनों देश सामरिक डाटा का आदान-प्रदान करने पर सहमत हुए। परिणामस्वरूप भारत अमेरिका के सबसे नजदीकी सैन्य साझादारों में शामिल हो गया है। तथा भारत अमेरिका से ऐसी सैन्य तकनीकों व सूचनाओं को प्राप्त कर सकेगा, जिन्हें वह गिने-चुने देशों को देता है। इसके अतिरिक्त इस 22 वार्ता में चार अन्य समझौतों पर हस्ताक्षर हुए यथा—(i) अर्थ ऑब्जर्वेशन एवं अर्थ साइंसेज में तकनीकी सहयोग बढ़ाने के लिए समझौता ज्ञापन (ii) हरियाणा स्थित नाभिकीय ऊर्जा साझेदारी के वैश्विक केन्द्र में सहयोग के संबंध में समझौता ज्ञापन की अवधि में वृद्धि (iii) दोनों देशों के डाक ऑपरेटरों के बीच कस्टम डाटा के आदान-प्रदान हेतु इलेक्ट्रानिक एक्सचेंज हेतु प्रावधान (iv) आयुर्वेद एवं कैंसर अनुसंधान के क्षेत्रों में सहयोग हेतु आशय पत्र। इस वार्ता के परिणामों के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि हमारी व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी साझा सिद्वातों व आम रणनीतिक हितो की मजबूत नींव पर खड़ी है। यहाँ उल्लेखनीय है कि अमेरिका के साथ भारत की पहली व दूसरी 22 वार्ता क्रमशः 6 सितम्बर, 2018 को नई दिल्ली तथा 18 सितम्बर, 2019 को वाशिंगटन डी.सी. में सम्पन्न हुई थी।[12] इसी तरह की 22 मंत्रिस्तरीय चौथी वार्ता 12 अप्रैल, 2022 को वाशिंगटन डी.सी. में सम्पन्न हुई जो कि डेमोक्रेटिक पार्टी के जो बाइडन के 20 जनवरी, 2021 को राष्ट्रपति बनने के पश्चात् पहली वार्ता थी। इस वार्ता में अमेरिकी विदेश मंत्री व रक्षा मंत्री क्रमशः एंटनी ब्लिंकेन व लायड ऑस्टिन ने तथा भारत का प्रतिनिधित्व विदेश मंत्री व रक्षा मंत्री क्रमशः डॉ. एस. जयशंकर व राजनाथ सिंह ने किया। इस वार्ता में पारस्परिक सहयोग संवर्धन, आतंकवाद पर ध्यान केंद्रित करते हुए पहले से चल रहे सहयोग को और प्रगाढ़ करने, हिंद-महासागर क्षेत्र में शांति, स्थिरता एवं विकास के लिए, अफगानिस्तान की धरती का उपयोग आतंकी गतिविधियों के लिए तथा किसी अन्य देश पर आक्रमण के लिए न होने देने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् के प्रस्ताव 2593 (2021) के अनुपालन का आह्वान तालिबान प्रशासन से किया गया, म्यामांर मे भी हिंसा की समाप्ति तथा निर्दोष लोगों की रिहाई व लोकतंत्र की वापसी हेतु आह्वान दोनों पक्षों ने किया, रूस-यूक्रेन युद्ध का मुद्दा भी छाया रहा जिसमें आम नागरिकों की मौत की निंदा करते हुए युद्ध को रोकने हेतु आह्वान दोनों देशों ने किया तथा भारत ने स्पष्ट किया कि अपनी विदेश नीति में कोई हस्तक्षेप उसे स्वीकार नहीं है। भारत द्वारा वर्ष 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त करने की भारत की कॉप-26 में की गई घोषणा का अमेरिका पक्ष ने स्वागत किया तथा साथ ही दोनों देशों के मध्य आपसी व्यापार पिछले वर्ष 2021 में 113 अरब डालर का बिंदु पार कर जाने पर दोनों पक्षों ने संतोष व्यक्त किया।[13]

3. **लीमोआ समझौता (2016)**—दोनों देशों के बीच वर्ष 2016 में संपन्न लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरेंडम आफ एग्रीमेंट (LEMOA) के तहत दोनों देश एक दूसरे के सैनिक अड्डों का उपयोग आपदा प्रबधंन, खोज व बचाव कार्यक्रम, ईंधन प्राप्त करने आदि में कर सकेंगे अर्थात् यह समझौता दोनों देशों की सेनाओं की एक-दूसरे की सैन्य सुविधाओं तक पहुँच को आसान बनाता है।

4. **क्वॉड (2017)**—क्वॉड अर्थात् क्वाड्रीलेटरल सिक्योरिटी डायॅलाग (QUAD चतुर्भुज सुरक्षा संवाद) भारत, अमेरिका, जापान व ऑस्ट्रेलिया के बीच एक अनौपचारिक रणनीतिक मंच है जिसकी अवधारणा औपचारिक रूप से सर्वप्रथम 2007 में जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे द्वारा प्रस्तुत की गयी थी

लेकिन उस समय मूर्त रूप नहीं ले पाया और पुनः 2017 में इस हेतु प्रयास करने के पश्चात् पूर्णतया अस्तित्व में आया। इसके माध्यम से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग स्थापित करने के साथ-साथ इस क्षेत्र में चीन के बढ़ने प्रभाव को कम किये जाने का प्रयास किया जा रहा है। इसकी पहली शिखर बैठक 12 मार्च 2021 को चारों सदस्य देशों के शासनाध्यक्षों की मेजबानी में वर्चुअल तरीके से सम्पन्न हुई जिसमें चारों देशों ने संयुक्त बयान में हिंद-प्रशांत क्षेत्र को मुक्त, खुला, सभी लिए समान अवसर वाला, लोकतात्रिक मूल्यों पर आधारित और किसी भी तरह के दबाव से रहित बनाने का संकल्प लिया। क्वाड देशों की दूसरी शिखर बैठक 24 सितम्बर, 2021 को वाशिंगटन डी.सी. में सम्पन्न हुई जिसमें उपर्युक्त प्रथम शिखर बैठक के मुद्दों के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन, कोविड-19 महामारी से निपटने आदि पर सहमति बनी। क्वाड की इस पहली व्यक्तिगत उपस्थिति वाली शिखर बैठक को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि चार लोकतांत्रिक देशों का यह संगठन हिंद-प्रशांत क्षेत्र और विश्व में शांति और समृद्धि सुनिश्चित करने का काम करेगा। यहां यह उल्लेखनीय है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नई चुनौतियों का मुकाबला करने तथा चीन के आक्रामक रवैए पर काबू पाने के लिए अमेरिका, ब्रिटेन, व ऑस्ट्रेलिया ने एक नए त्रिपक्षीय गठबंधन ऑकस (AUKUS) बनाने की घोषणा तीनों देशों द्वारा एक साझा बयान के तहत 15 सितम्बर, 2021 को की गई।[14]

5. **कोमकासा (2018)**—कोमकासा अर्थात् 'कम्यूनिकेशन कंपेटेब्लिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट (COMCASA) के तहत भारत को अमेरिका द्वारा आधुनिक रक्षा तकनीक प्राप्त होगी तथा भारत सुरक्षित संचार चेनलो का उपयोग कर सकेगा, जिससे संचार तकनीकी क्षेत्र में संबंध प्रगाढ़ हुए है।

6. **रक्षा सहयोग**—वर्तमान में भारत का सर्वाधिक रक्षा आयात अमेरिका से किया जा रहा हैं जिनमें प्रमुखतया सी-130 जे. हरक्युलस एयरक्राफ्ट, सी-17 ग्लोब मास्टर, चिनूक, अपाचे, पी-8 आई पोसाइडन एयरक्राफ्ट, एफ-16 आदि एयरक्राफ्ट का आयात किया जा चुका है।

7. **अंतरिक्ष सहयोग**—वर्तमान में निसार अर्थात नासा-इसरो सिथेटिक अपार्चर राडार (NISAR) नामक परियोजना का विकास किया जा रहा है जिससे दोनों देश आपस में अंतरिक्ष के क्षेत्र में सहयोग कर सकेंगे। इससे पूर्व भी भारत द्वारा अमेरिका के वाणिज्यिक उपग्रहों-लेमूर-2 पीटर, लेमूर-2 जेरोन, लेमूर-2 जोएलो, लेमूर-2 क्रिस को 28 सितम्बर, 2015 को पहली बार अपने अंतरिक्ष यान PSLV-C30 द्वारा प्रक्षेपित कर नया इतिहास रचा जो कि दोनों देशों के मध्य अंतरिक्ष के क्षेत्र में अच्छे संबंधो का सूचक है।

8. **जय (2018)**—जय अर्थात् जापान, अमेरिका, भारत (JAI) का 2018 में स्थापित एक अनौपचारिक संगठन है जिसका उद्देश्य भी क्वॉड, ऑकस की भाँति हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की आक्रामक विदेश नीति को संतुलित करना है।[15]

9. **मालाबार नौसैन्य अभ्यास**—यह क्वॉड समूह का एक महत्त्वपूर्ण नौसेनिक युद्धाभ्यास है जिसकी शुरुआत किकलिघटर प्रस्ताव के माध्यम से द्वारा 1992 में भारत व अमेरिका द्वारा की गई थी। जिसमें 2014 में जापान तथा 2020 में ऑस्ट्रेलिया शामिल हुआ। इसका 25वाँ संस्करण मालाबार युद्धाभ्यास 2021 प्रशांत महासागर में 'गुआम नट' पर शुरू हुआ। गुआम उत्तरी प्रशांत महासागर में एक अमेरिकी द्वीप समूह है जो चीन के काफी निकट है। इसका प्रमुख उद्देश्य हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभुत्त्व को सीमित करना है।[16]

10. **भारत-अमेरिका शिखर सम्मेलन (2022)**—दोनों देशों के बीच 11 अप्रैल, 2022 को आभासी शिखर सम्मेलन सम्पन्न हुआ। भारतीय प्रधानमंत्री श्री मोदी व अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन की यह वार्ता ऐसे समय में सम्पन्न हुई, जब रूस-यूक्रेन युद्ध के मामले में दोनों देशों के दृष्टिकोण में मतभेद बना हुआ था, क्योंकि 24 फरवरी, 2022 को यूक्रेन पर रूसी हमले के पश्चात् संयुक्त राष्ट्र महासभा में अब तक अमेरिका द्वारा रूस के खिलाफ तीन प्रस्ताव लाये जा चुके थे लेकिन भारत इन तीनों ही प्रस्तावों पर मतदान के समय अनुपस्थित रहा। तीसरा प्रस्ताव 7 अप्रैल 2022 को पारित हुआ जिसके तहत यूक्रेन में मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोप में रूस को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद् से निलम्बित कर दिया गया।[17] इस संदर्भ में मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) बी.सी. खंडूरी का लोकसभा की बहस के दौरान दिया गया वक्तत्व उल्लेखनीय है कि, "चाहे हमें पसंद हो या ना हो, हमें इस तथ्य का ध्यान रखना होगा कि अमेरिका इस एक ध्रुवीय विश्व में एकमात्र महाशक्ति है, लेकिन साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिए की भारत भी एक विश्व-शक्ति और महाशक्ति के रूप में तेजी से उभर रहा है। इसलिए हमारा मानना है कि अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में संयुक्त

राज्य अमेरिका के साथ हमारे संबंध अच्छे होने चाहिए लेकिन अपनी सुरक्षा की कीमत पर नहीं।[18] इसलिए 'गुटनिरपेक्षता की नीति' का अनुसरण करते हुए रूस के विरुद्ध लाये गये प्रस्ताव पर मतदान में भारत अनुपस्थित रहा। उपर्युक्त कारणों से दोनों देशों के मध्य क्षणभर के लिए कटुता के बादल छा गए। किंतु इन मुद्दों के बावजूद दोनों देशों के शासनाध्यक्षों की वार्ता अत्यन्त सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई। श्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि, "भारत व अमेरिका विश्व के सबसे बड़े व सुदृढ़ दो लोकतंत्र के रूप में एक दूसरे के स्वाभाविक सहयोगी हैं और दोनों देशों के बीच पिछले कुछ वर्षों में रिश्तों में जो विकास हुआ है तथा जो गति आई है, उसकी कुछ दशक पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, दूसरी ओर जो बाइडन ने मोदी जी के साथ मुलाकात पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि 'आपको देखकर हमेशा अच्छा लगता है।" इस वार्ता में कोविड-19 महामारी, एच-1 बी वीजा, जलवायु परिवर्तन, हिंद- प्रशांत क्षेत्र की स्थिति, रूस-यूक्रेन युद्ध आदि मुद्दों पर चर्चा हुई। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि श्री मोदी जी की 22-25 सितम्बर, 2021 की अमेरिका यात्रा के दौरान जो बाइडन के साथ वार्ता के समय मोदी जी ने कहा कि, 'इस वर्ष उनके नेतृत्व में जो बीज बोए जाएंगे, वह पूरे दशक में भारत-अमेरिका संबधो में महत्वपूर्ण रहेगा, इस परिप्रेक्ष्य में ट्रेड, टेलेंट, टेक्नोलाजी व ट्रस्टीशिप आदि का उल्लेख श्री मोदी ने किया।[19] इस प्रकार स्पष्ट होता है कि मोदी जी के कार्यकाल के दौरान दोनों देशों के बीच मधुर संबंधों ने नई ऊचाईयाँ छुई।

भारत-अमेरिका संबंध : चुनौतियाँ

भारत और अमेरिका के बीच मजबूत होते संबंधों के साथ-साथ ही कई द्विपक्षीय और वैश्विक मुद्दों को लेकर अलग-अलग दृष्टिकोण होने के कारण मतभेद भी नजर आते है यथा—

1. परमाणु अप्रसार संधि 1970 (एन.पी.टी.) व व्यापक परमाणु परीक्षण निषेध संधि 1996 (सी.टी.बी.टी.) भेदभाव पूर्ण होने के कारण भारत ने इन दोनों पर अब तक हस्ताक्षर नहीं किए हैं, जिसकी अपेक्षा अमेरिका को है।

2. मानवाधिकार संबंधी मुद्दों विशेषकर कश्मीर को लेकर मतभेद क्योंकि अमेरिका इस मुद्दे पर तथा साथ ही पाकिस्तान द्वारा प्रेरित एवं समर्थित सीमा पर आतकंवाद के मसले पर अमेरिका भारत-पाक के साथ दोहरे मापदण्ड की नीति अपनाता आया है।[20]

3. एच-1 बी वीजा विवाद—यह अमेरिका में कुशल श्रमिकों को दिया जाने वाला अस्थायी कार्य वीजा है। ट्रम्प प्रशासन के द्वारा इस वीजा कार्यक्रम के लिए कठोर नियम बनाये गए थे जिसके तहत एच-1 बी वीजा धारकों के जीवन साथियों को दिए जाने वाले एच-4 वीजा को समाप्त करना भी शामिल था जो दोनों के संबंधो में चुनौती बनकर उभरा। किंतु हाल ही में जो बाइउन प्रशासन ने जीवन साथियों को दिया जाने वाले वीजा को बहाल करने की घोषणा की।

4. विश्व व्यापार संगठन के मंच पर भारत-अमेरिका के हित मेल नहीं खातें।[21]

5. सी.ए.ए.टी.एस.ए (2018)—काउंटरिंग अमेरिकन एडवर्सिज थ्रो ट्रेड सेक्शन्स् एक्ट (CAATSA व्यापार प्रतिबधं अधिनियम के माध्यम से अमेरिकी विरोधियों का मुकाबला) के माध्यम से अमेरिका अपने विरोधियों यथा ईरान, रूस, और उत्तरी कोरिया पर तेल और गैस, उद्योग, वित्तीय संस्थाओं, रक्षा व सुरक्षा आदि क्षेत्रों में आर्थिक प्रतिबंध लगाता रहता है। इन देशों के साथ उपर्युक्त क्षेत्रों में व्यापार को समाप्त करने के लिए भारत पर अमेरिका द्वारा दबाव डाले जाने के कारण तनाव उत्पन्न होता है।

6. भारत और रूस के ऐतिहासिक रूप से रक्षा के साथ-साथ कई अन्य क्षेत्रों में मैत्रीपूर्ण संबंध है। परंतु रूस पर अमेरिकी व्यापारिक प्रतिबंधों से भारत के लिये अमेरिका और रूस के मध्य संतुलन बनाना कठिन हो गया है।[22]

7. टी.पी.एन.डब्ल्यू. संधि (2021)—बड़ी परमाणु शक्तियों द्वारा अस्वीकार किए जाने के बावजूद परमाणु हथियारों को प्रतिबंधित करने के लिए जुलाई 2017 में स्वीकार की गई सयुंक्त राष्ट्र संघ की परमाणु प्रतिबधं संधि (ट्रीटी ऑन द प्रोहिबिशन ऑफ न्यूक्लीयर वेपंस-TPNW) 22 जनवरी 2021 से प्रभावी हो चुकी है। भारत ने शुरू से ही इस संधि का समर्थन नहीं किया तथा न ही इसके लिए वार्ता में भागीदार रहा है क्योंकि यह साथ इसके समर्थक देशों पर परमाणु हथियारों के विकास, परीक्षण, उत्पादन, भंडारण, उपयोग, स्थानांतरण आदि पर बाध्यकारी रोक लगाती है। भारत पर इस संधि का समर्थन करने हेतु अंतर्राष्ट्रीय दबाव बनाया जा रहा है जिससे यह मुद्दा भारतीय विदेश नीति के समक्ष एक चुनौती बना हुआ है।[23]

8. पर्यावरण मुद्दा—'जलवायु परिवर्तन' सारी जिम्मेदारी विकासशील देशों की। इसी कारण अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड

ट्रम्प ने 2015 के पेरिस जलवायु समझौते से बाहर निकलने की घोषणा की किंतु वर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडन ने इस समझौते में पुनः शामिल होने की घोषणा की है। इस प्रकार अमेरिका द्वारा जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर दोहरी नीति अपनाने के कारण भारत के साथ मनमुटाव होना स्वाभाविक है।[24] भारत-अमेरिकी संबंधों में उपर्युक्त चुनौतियों के परिणामस्वरूप कभी-कभी तनाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है किंतु अधिकाशंतया संबंधों में मित्रता का भाव देखा गया है।

भारत-अमेरिका संबंध : सुझाव

1. भारत-अमेरिका दोनों ही विश्व के दो सर्वाधिक बड़े लोकतंत्रात्मक देश है इसलिए वर्तमान अशांत दुनिया में शांति स्थापना एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की अभिवृद्धि हेतु दोनों देशों को साझा प्रयास करना चाहिए।

2. वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जल, ऊर्जा, परिवहन, अंतरिक्ष, स्वास्थ्य, जलवायु एवं खाद्य-सुरक्षा इत्यादि क्षेत्रों की महत्ता निरंतर बढ़ती जा रही है। अतः उपर्युक्त क्षेत्रों में पारस्परिक सहयोग एवं निवेश सम्वर्द्धन किया जाना चाहिए। ज्ञातव्य है कि I2U2 अर्थात् इंडिया, इजराइल, यू.एस.ए. और यू.ए.ई., इन चार देशों ने उपर्युक्त क्षेत्रों में साझा प्रयास करने हेतु एक नया समूह बनाया है जो कि 'पश्चिम एशिया' के 'क्वाड' के रूप में देखा जा रहा हे। इस समूह की परिकल्पना अक्टू. 2021 में इन देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक में की गई थी, जिसका पहला शिखर सम्मेलन वर्चुअल तरीके से 14 जुलाई 2022 को सम्पन्न हुआ जिससे दोनों देशों के बीच संबंधों में सकारात्मक सुधार आना अपेक्षित है।

3. अफगानिस्तान, जहाँ शांति, सुरक्षा और समृद्धि को प्रोत्साहन देने में दोनों देशों के गहरे और समान हित हैं, के पुनर्निर्माण के लिए दोनों को परस्पर सहयोग करना चाहिए ताकि अपने-अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति मुख्यतया आतंकवाद जैसी वैश्विक समस्या को समाप्त किया जा सके।

4. आतंकवाद, वैश्विक जलवायु परिवर्तन आदि मुद्दों पर दोंनों देशों को अनिवार्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय मंचों (संयुक्त राष्ट्र संघ) पर एकजुटता का परिचय देना चाहिए।

5. दोनों देशों को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए खासतौर से चीन के बढ़ते प्रभाव को समाप्त करने के लिए द्विपक्षीय व बहुपक्षीय समझौतों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

6. भारत-अमेरिका संबंधों में सुधार और दोंनों देशों के बीच विभिन्न क्षेत्रों यथा—रक्षा, तकनीक, अनुसंधान, अर्थव्यवस्था आदि के विकास में प्रवासी भारतीयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है इसलिए प्रवासी भारतीयों से संबंधित नियमों मुख्यतया वीजा नियमों में दोनों देशों द्वारा शीथिलता प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे अधिक से अधिक निवेश करने हेतु प्रोत्साहित हो सके।

7. चीन की बढ़ती अंतरिक्ष क्षमताओं को मध्यनजर रखते हुए दोंनों देशों को अंतरिक्ष व तकनीकी क्षेत्र में द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। अर्थात् हॉर्ड पावर के बजाय साफ्ट पॉवर के क्षेत्र में संबंधों को बढ़ावा देना होगा।

8. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में भारत की स्थायी सदस्य की दावेदारी का अमेरिका द्वारा प्रत्यक्ष और स्वतंत्र रूप से पूर्ण समर्थन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत और अमेरिका के बीच रिश्तों का रेखाचित्र मित्रता की चाह, कटुता, तनाव, अलगाव और अविश्वास के दायरे में निरंतर उतार-चढ़ाव वाला रहा हैं किंतु कतिपय क्षेत्रों में मतभेद के बावजूद अनेक क्षेत्रों में परस्पर सहयोग किये जाने से संबंधों में जो शंका के बादल मंडरा रहे थे वे धूमिल होते चले जा रहे हैं। सोवियत संघ के विघटन अर्थात् शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात् धीरे-धीरे स्थितियों में बदलाव हुआ और बिल क्लिंटन के राष्ट्रपति बनने के पश्चात् भारत के प्रति अमेरिकी नीति में आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिला। इसी क्रम में जॉर्ज डब्ल्यू बुश एवं बराक ओबामा के कार्यकाल के दौरान संबंधों में प्रगाढ़ता नजर आयी। भारत में नरेन्द्र मोदी व अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प के सत्ता में आने के पश्चात् दोनों के संबंधों में परिपक्वता और गतिशीलता देखने को मिलती है जो कि हाउडी मोदी व नमस्ते ट्रम्प जैसे कार्यक्रमों से प्रमाणित होता है, जो कि संबंधों की नई शुरूआत का आगाज था। परिणामस्वरूप अमेरिका का पाकिस्तान के साथ मोहभंग हुआ। पाकिस्तान को दी जा रही सुरक्षा सहायता को बंद कर दिया जाना, अमेरिका का पाकिस्तान के साथ मोहभंग को दर्शाता है। इस प्रकार स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल तक दोनों देशों के संबंधों में पर्याप्त सहयोग देखने को मिला हैं। आज दोनों देश शिक्षा, तकनीकी, रक्षा, अनुसंधान, सेवा आदि कतिपय क्षेत्रों में साझा प्रयासों के माध्यम से मैत्री और सौहार्दपूर्ण संबंध

स्थापित कर रहे हैं। जो कि दोनों के संबंधों की प्रगाढ़ता व उज्जवल भविष्य को दर्शाता है।

संदर्भ सूची

1. पंत, पुष्पेश, जैन, श्रीपाल, पंचौला, राखी, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध-सिद्धांत और व्यवहार, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2019, पृ.सं. 497-498
2. बिस्वाल, तपन, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, मेकमिलन पब्लिशर्स इंडिया लि., हरियाणा, 2013, पृ.सं. 125
3. घई, यू.आर., अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति-सिद्धातं तथा व्यवहार, न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कम्पनी, जालन्धर, 2010, पृ.सं. 124
4. फड़िया, बी.एल., अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2014, पृ.सं. 347
5. समकालीन विश्व राजनीति, कक्षा-12, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, 2019, पृ.सं. 44-45
6. फड़िया, बी. एल., फड़िया कुलदीप, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020, पृ.सं. 216-221
7. दीक्षित, जे. एन., भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999, पृ.सं. 320-325
8. जैन, बी. एम., अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2014 पृ.सं. 301
9. फड़िया, बी.एल., फड़िया कुलदीप, पूर्वोक्त, पृ.सं. 231
10. प्रतियोगिता दर्पण, समसामयिक वार्षिकी, 2021, पृ. स. 107
11. पंत, पुष्पेश, 21 वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय संबंध, मेकग्रा हिल एजुकेशन इंडिया प्राइवेट लि., चैन्नई, 2021, पृ.सं. 98
12. प्रतियोगिता दर्पण, समसामयिक वार्षिकी, 2021, पृ.सं. 112
13. प्रतियोगिता दर्पण, जून 2022, पृ.सं. 14
14. प्रतियोगिता दर्पण, समसामयिक वार्षिकी, 2022, पृ.सं. 98, 105
15. एचटीटीपीएस//डब्ल्यु डब्ल्यु डब्ल्यु.बीबीसी.कॉम
16. जैन, बी. एम., पूर्वोक्त, पृ.सं. 278
17. प्रतियोगिता दर्पण, जून 2022, पृ.सं. 15
18 समकालीन विश्व राजनीति, कक्षा-12, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, पृ.सं. 46
19. प्रतियोगिता दर्पण, समसामयिक वार्षिकी, 2022, पृ.सं. 89
20. जैन, बी. एम., पूर्वोक्त, पृ.सं. 298
21. फड़िया, बी.एल., फड़िया कुलदीप, पूर्वोक्त, पृ.सं. 228, 231
22. एचटीटीपीएस//डब्ल्यु डब्ल्यु डब्ल्यु.दृष्टिइतिहास.कॉम
23. प्रतियोगिता दर्पण, समसामयिक वार्षिकी, 2021, पृ.सं. 116
24. पंत, पुष्पेश, पूर्वोक्त, पृ.सं. 130